राज्यपाल सचिवालय, बिहार
(जन–सम्पर्क शाखा)
राजभवन, पटना–800022

प्रेस–विज्ञप्ति

संख्या–33/2024

भारतीय ज्ञान परंपरा का विस्तार पूरे विश्व में होना चाहिए–राज्यपाल

पटना, 14 फरवरी, 2024 :– माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने राजभवन के राजेन्द्र मंडप में 'भारतीय ज्ञान परंपरा' विषय पर आयोजित व्याख्यान कार्यक्रम का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि 'भारतीय ज्ञान परंपरा' का विस्तार पूरे विश्व में होना चाहिए। इसके लिए हमें इसे ठीक ढंग से समझने की आवश्यकता है।

प्रख्यात शिक्षाविद् डॉ० चंद किरण सलूजा ने मुख्य वक्ता के रूप में कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश है। उन्होंने कहा कि व्यक्ति का समग्र विकास ही शिक्षा का उद्देश्य है तथा इसका वर्णन तैत्तरीय उपनिषद् में विस्तार से किया गया है। कला, खेल और संगीत की शिक्षा बच्चों के लिए अत्यन्त आवश्यक है। बहुविषयक शिक्षा बच्चों के मानसिक विकास के लिए उपयोगी है। उन्होंने भाषा का महत्व बताते हुए कहा कि प्राचीन भारत में इस पर काफी बल दिया गया था। बच्चों को उनकी भाषा में ही शिक्षा दी जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि शिक्षा के चार स्तंभ बताए गये हैं– ज्ञान हेतु शिक्षा, कर्म हेतु शिक्षा, मिलकर रहने हेतु शिक्षा और मनुष्य बनने के लिए शिक्षा। ये चारों सिद्धांत भारतीय ज्ञान परंपरा में सन्निहित हैं तथा इन्हें राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शामिल किया गया है।

कार्यक्रम के प्रारंभ में राज्यपाल ने माँ सरस्वती की मूर्ति पर पुष्प अर्पित किया तथा दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। डॉ० सलूजा ने राज्यपाल को 'शिक्षा : भारतीय परिप्रेक्ष्य' नामक अपनी पुस्तक भेंट की।

इस अवसर पर राज्यपाल के अपर मुख्य सचिव श्री ब्रजेश मेहरोत्रा, बिहार के सभी विश्वविद्यालयों के कुलपतिगण, कुलसचिवगण, डी० एस० डब्ल्यू एवं सी०सी०डी०सी०, विभिन्न शैक्षिक संस्थानों के निदेशकगण, विभिन्न महाविद्यालयों के प्राचार्यगण, विश्वविद्यालयों एवं शैक्षिक संस्थानों के विद्यार्थीगण तथा राज्यपाल सचिवालय के पदाधिकारीगण एवं कर्मीगण उपस्थित थे।

.....